चदरिया झीणी रे झीणी.....

''कबीरा जब हम पैदा हुए, जग हँसे हम रोये,
ऐसी करणी कर चलो, हम हँसे जग रोये।''

चदरिया झीणी रे झीणी, हो राम नाम रस पीनी।।

अष्टकमल का चरखा बनाया, पांच तत्व की पूनी
नव दस मास बुनन को लागे, मूर्ख मैली कीनि।।
चदरिया.....

जब मोरी चादर बन घर लाई, रंगरेज को दीनी
ऐसो रंग रंग्यो रंगरेजे, लालों लाल कर दीनी।।
चदरिया....

चादर ओढ़ शंका मत करियो, दो दिन तुमको दीनी
मूर्ख लोग भेद नहीं जाणे, दिन–दिन मैली कीनी।।
चदरिया....

ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढ़ी, शुकदेव निर्मल कीनी
दास कबीरे ने ऐसी ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी।।
चदरिया.....